JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जन–जन के प्रबल पक्षधर – नागार्जुन

डॉ.पविता यादव
सहायक प्रवक्ता
हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़

सारांश

जन्म – नागार्जुन का जन्म सन् 1911 में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को बिहार प्रांत के दरभंगा जिले के तरउनी नामक ग्राम में हुआ था। उनके बचपन का नाम वैद्यनाथ मिश्र था। नागार्जुन के पिता का नाम पं गोकुल मिश्र और माता का नाम उमादेवी था। श्रीमती अपराजिता देवी उनको धर्मनिष्ठ और पतिपरायणा पत्नी के रूप में मिली। नागार्जुन की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की ही पाठशाला में हुई। गनौली संस्कृत विद्यालय से व्याकरण में मध्यमा उत्तीर्ण करने के उपरान्त ये चार वर्ष तक काशी में शास्त्री परीक्षा के लिए अध्ययन करते रहे। काशी में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त उन्होंने कलकता से साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। फिर एक साल पचगछिया (जिला सहरसा) और एक साल कलकता रहे। तत्पश्चात् वे सिंहल जाकर बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए और पालि के पण्डित बने। श्रीलंका के विद्यालंकार परिवेष में वे तीन साल रहे। वहाँ कामचलाऊ अंगरेजी सीखी। नागार्जुन को मातृभाषा मैथिली, वैदुषिक भाषा संस्कृत, पालि, अर्धमागधी अपभ्रंश, सिंहली, तिब्बती, मराठी, गुजराती, बंगाली, पंजाबी सिन्धी इत्यादि भाषाएँ बखूबी आती थीं। धड़ल्ले से उन्हें पढ़ लेते थे, सिर्फ पढ़ते ही नहीं, रूचि से उनके नवीनतम साहित्य और कविता शैलियों से अपने–आपको परिचित कराते रहते थे।

मुख्य शब्द– दलित–शोषित ,सामाजिक–राजनैतिक, अराजकतावादी।

नागार्जुन मैथिल ब्राह्मणों के संस्कृत पण्डित घराने से थे। परदादा, पिता सब खेती करते थे। चूँकि पिता गोकुल मिश्र और उनके पिता छत्रमणि सब घर में छोटे थे, अतः खेती–बाड़ी उन्हें ही करनी पड़ती थी। तरौनी काफी उपजाऊ हिस्सा है पूर्वोत्तर बिहार का। नागार्जुन का जन्म ननिहाल के ग्राम सतलखा पोस्ट मधुवनी, दरभंगा में हुआ पर स्कूल आदि में तरौनी, पिता के ग्राम को ही जन्मस्थान लिखाया गया। नागार्जुन के पिता का स्वर्गवास सन् 1943 में हुआ। तब से गाँव के सारे गृहकार्य का उत्तरदायित्व पत्नी ने संभाल लिया। नागार्जुन जी घुमक्कड़ी करते रहे। तीन–तीन बरस तक घर लौटने का नाम नहीं लिया। आज यहाँ है तो कल वहाँ। नागार्जुन यों शुद्ध साहित्यजीवी बन गये। वह बनना बहुत कठिन था, विशेषतः सोद्देश्य रचनाकार के लिए। आज नागार्जुन को किसी भी राजनैतिक पक्ष या मतवाद के 'लेवल' से परिभाषित करना कठिन है। वे दलित–शोषित वर्ग के सच्चे हितैषी थे। उन्हें 'अराजकवादी' दार्शनिक अर्थों में कहा जाता है। वे समाजवाद और जनतंत्र दोनों में विश्वास करते थे। पर आज के हालात में जितने भी, दक्षिणपंथियों का तो सवाल ही नहीं उठना पर वामपंथी जो भी दल है उनसे वे सन्तुष्ट नहीं रहे। इसलिए 'बाबा' फक्कड़ थे पुनः वही 'यात्री', कवि के कवि।

नागार्जुन सन् 1934 में जैन मुनियों को संस्कृत और प्राकृत पढ़ाने के लिए काठियावाड़ (गुजरात) में अध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1935 में स्वामी केशवानन्द के साथ मठ में प्राचीन भारतीय भाषाओं का अध्यापन किया। सन् 1936 में वे लंका गये और यहाँ बौद्ध भिक्षु हो गये। सन् 1938 में तिब्बत की यात्रा की। सन् 1939 में जेल गये। 1945 में उन्होंने ज्ञानपीठ वाराणसी और 1951 में वर्षा की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में कार्य किया। 1952–53 में में रहकर उन्होंने स्वतन्त्र लेखन किया। सन् 1968 में मैथिली कविताओं के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत हुए। सन् 1974 में जयप्रकाश आन्दोलन में उन्हें जेल जाना पड़ा। उनकी रिहाई सन् 1976 में हुई। आपात्काल में उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गाँधी का खुलकर विरोध किया।

नागार्जुन संस्कृत पालि, प्राकृत और अपभ्रंश, बंगला, गुजराती, मैथिली आदि भाषाओं के प्रकांड पंडित थे। उनकी पहली कविता मैथिली भाषा में सन् 1930 में प्रकाशित हुई। खड़ी बोली में रचना करना उन्होंने बाद में प्रारम्भ किया और उनको प्रथम कविता खड़ी बोली में सन् 1935 में लाहौर के 'विश्ववन्धु' में प्रकाशित हुई। नागार्जुन की प्रथम पुस्तिका थी– 'चनाजोर गरम' जो सन् 1952 में प्रकाशित हुई। सन् 1956 में ' युगधारा' छपी। तब से उनका अबाध साहित्य–सृजन–कर्म उनके देहावसान (5 नवम्बर, 1998) पर्यन्त चलता रहा।

नागार्जुन का स्वभाव अत्यन्त सरल, मृदु एवं व्यक्तित्व निरभिमानी था। वे फक्कड़ प्रकृति के साहित्यकार थे, जो एक स्थान पर कभी टिक कर नहीं रहते। घूमना उनकी प्रकृति बन गया था। परिचित लोगों के बीच वे नागा बाबा के नाम से मशहूर थे। 'यात्री'उनका पुराना उपनाम है। वे मूलतः प्रगतिवादी साहित्यकार थे। कवि, उपन्यासकार, कहानीकार के रूप में हिन्दी–साहित्य में उनका गौरवपूर्ण स्थान है।

नागार्जुन का नाम जब हिन्दी कविता के इतिहास में लिया जाएगा, तब वे सामाजिक–राजनैतिक व्यंग्य–रचनाओं के लिए याद किये जाएँगे, पर यह उनके व्यक्तित्व का एक दशांश हिस्सा है। नागार्जुन निरे व्यंग्य–कवि नहीं हैं। वे उससे बहुत–कुछ अधिक है। नागार्जुन की कविता ने, एक जनकवि की रचना की भाँति, युग–जागरण में भी योग निश्चित रूप से दिया है। उसने हिन्दी कविता और आलोचना में फैले कुहासे को अंशतः दूर किया है और कविता से समझदार रसिक का मनःस्वास्थ्य बढ़ाया है। इस दृष्टि से हिन्दी में ऐसे व्यंग्यकार और कुशल शब्दकार को पाकर अब हमें अन्य भारतीय भाषाओं की व्यंग्य कविता के बराबर बैठने का हक हासिल हो गया है। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

काव्य–कृतियाँ – युगधारा, सतरंगे भखों वाली,प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, भस्मांकुर, तुमने कहा था, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हजार–हजार बाहों वाली तथा (मैथिली में) नग्न गाछ।

उपन्यास– पारो, नवतुरिया, बलचनमा, रतिनाथ की चाची,नयी पौध,बाबा बटेसरनाथ,वरुण के बेटे, दुखमोचन, उग्रतारा. इमरतिया, जमनिया के बाचा, अभिनन्दन। संस्कृत–काव्य रचनाएँ– धर्मलोक–शतकम्, देश–दशकम्।

बालसाहित्य– सयानी कोपल, तीन अहदी, प्रेमचन्द, अयोध्या का राजा, वीर विक्रम। लघुप्रबन्ध – एक व्यक्ति एक युग। अनुवाद : मेघदूत का हिन्दी पद्यानुवाद, गीत–गोविन्द और विद्यापति के गीतों का बंगला अनुवाद । रचनावली – समस्त रचनाएँ आठ खण्डों में वाणी प्रकाशन से प्रकाशित।

कृती कवि–कर्म– जिस तरह छायावाद के शलाका–पुरुष निराला और प्रयोगवाद नयी कविता के शलाका–पुरुष अज्ञेय हैं, उसी तरह प्रगतिवादी कविता के शलाका–पुरुष नागार्जुन है। मैथिलीशरण गुप्त के माध्यम से हम छायावाद की पूर्ववर्ती खड़ी बोली की कविता को पहचान सकते हैं, उसी तरह छायावाद के बाद प्रगतिशील कविता को पहचानने के लिए अगर कोई एक ही कवि सबसे ज्यादा हमारे मतलब का है तो वह नागार्जुन है। यों और भी कवि हैं जैसे कि मुक्तिबोध, शमशेर, केदार और त्रिलोचन पर नागार्जुन जैसा इनमें से एक भी नहीं है। नागार्जुन प्रगतिवाद के निराला है।

नागार्जुन व्यक्ति नहीं है. एक समूचा जन–चरित्र है। किताबी लोग दबी जुबान से और कई बार खुले तौर पर भी नागार्जुन की धुरी–हीनता पर आसान टिप्पणी कर देते थे और वे लोग जो उनकी विसंगतियों या मार्गान्तरणों की कुछ अपवाद–सी पंक्तियों की टोह लेते, छिपाने की कोशिश करते हुए समझते थे कि इन तमाम विचलनों से इनकार करते हुए कवि का पक्ष मजबूत कर रहे हैं, वे भी नागार्जुन के गलत मूल्यांकन के जिम्मेदार है –और ज्यादातर वे ही। क्योंकि हितैषियों को गलत कैसे कहा जा सकता है? जबकि नागार्जुन इसीलिए नागार्जुन थे कि वे जनता के विवेक का ही नहीं उसके आवेशों का भी, उसकी खूबियों का ही नहीं, कमजोरियों का भी, शाश्वत का ही नहीं तत्काल का भी, शोषण का हो नहीं राग और सौन्दर्य का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। कई बार वे उन अभिजनों की प्रशंसा और आदर भी करते थे जिन्होंने जीवन के ऊंचे मानक कायम किये हैं और कला, सौन्दर्य तथा विचारों को समृद्धि दी है। वरना मेघदूत, गौत–गोविन्द, विद्यापति गाँधी, महावीर और गौतमबुद्ध में उनकी आस्था क्यों होती ? नागार्जुन हर तरह की चौखट से इनकार का नाम है। इसीलिए उन्हें किसी खेमे में बाँधने की ज़रूरत नहीं है। वे दरअसल बौद्ध नहीं है, करुणा द्रवित मनुष्य हैं; वे कम्युनिस्ट नहीं है, प्रगतिशील हैं; वे ज्ञान और संस्कृति के सार्थवाह नहीं है, लोकाकांक्षा के सहचर है।

एक बड़ा कवि न तो पालतू रह सकता है, न किसी सीमा में आबद्ध रह सकता है। यह सारी प्रतिबद्धता, आवद्धता या संबद्धता को अपने लिए चुनता है और उनके जरिये लोक, समय और मानवीय कर्तव्य से जुड़ता है। इन्हीं के सहारे वह इनका अतिक्रमण भी करता है। कबीर ने भी यही किया और नागार्जुन ने भी।'

नागार्जुन के काव्य में विविधता है, उनके काव्य की भाषा में भी विविधता है। नागार्जुन के जीवन के अनुभवों में विविधता है। काव्य के आस्वाद और भाषा को विविधता का अनुभव वैविध्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवन के अनुभव और रचनात्मक साहित्य में जितना प्रत्यक्ष सम्बन्ध नागार्जुन के यहाँ देखने को मिलता है, उतना विभिन्न कारणों से उनके समकालीन या बाद के अधिकांश कवियों में नहीं मिलता।

डॉ रामविलास शर्मा ने लिखा है कि 'नागार्जुन जितने क्रांतिकारी सचेत रूप से है, उतने ही अचेत रूप से भी है।' नागार्जुन के सहज संस्कार और सजग विचारधारा में विरोध नहीं है। इसका कारण यह है कि अपने जीवन को स्थिति से अपने विविध अनुभवों के प्रसंग में नागार्जुन की चेतना को जो आधार भूमि तैयार हुई, उसकी स्वाभाविक परिणति क्रांतिकारी दिशा में ही हो सकती थी इसलिए जब ये मार्क्सवाद और वैज्ञानिक चिन्तन के नज़दीक आये, तब वह उनके संस्कार की दुनिया के साथ घुलमिल गया। इससे उनके सृजन पर यह प्रभाव पड़ा कि व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वजनिक रूप में डालने का जटिल कार्य नागार्जुन ने अत्यन्त सरलता के साथ किया।

जिन भाष्यकारों को नागार्जुन की यह प्रखर और पक्षधर चेतना खलती थी, वे कभी उनकी निन्दा करते थे और कभी उनके विचारों को तोड़–मरोड़कर पेश करते थे। नागार्जुन की एक प्रसिद्ध कविता है' बसन्त श्री अगवानी'। प्रकृति में हर तरफ बसन्त का उल्लास छा गया है. दूर अमराई में कोयल बोलती है, वृद्ध वनस्पतियों की टूटी शाखाओं में पोर पोर, टहनी टहनी दहकने लगती है, अलसी के नीले फूलों पर आकाश मुस्काता है, पिचके गालों पर भी कुंकुम न्यौछावर हो जाता है। रंगों के इस उल्लास में जब सारा संसार वसंत की अगवानी करने के लिए बाहर निकलता है तो ठौर–ठौर पर सरस्वती माँ खड़ी दिखायी देती है। वे प्रज्ञा की देवी हैं। वे सहज उदार है। वे अपने अभिवादन में झुके आस्तिक–नास्तिक सभी को सम्बोधित करती है ७

इस विवरण से स्पष्ट है कि आज लक्ष्मी और सरस्वती में सन्तुलन नहीं है, धूतों ने उनमें झगड़े की बात फैला रखी है। प्रज्ञा की देवी अपनी प्रिय संतानों को यह ज्ञान देती है कि बुद्धि और वैभव का अलगाव मिटाकर, दोनों को एक कर ही जन–जीवन की प्रगति सम्भव है। ऐसा तभी होगा जब धूतों की चाल नाकाम कर दी जाएगी।

स्पष्ट है कि नागार्जुन के व्यंग्य का निशाना वह बनता है जो शोषक–शासक वर्ग से सम्बद्ध होकर जनता को ठगने या कुचलने की बदनीयत रखता है। नागार्जुन परिस्थितियों और वस्तुओं में अन्तःसम्बन्ध देखते हैं, इसलिए सामाजिक विधान की असंगतियों को राजनीति से काट कर नहीं पेश करते। यही कारण है कि उनके राजनीतिक व्यंग्य में शासक शोषक वर्ग के प्रति उनका रोष और घृणा तथा दबी–कुचली जनता के प्रति उनका आत्यन्तिक ममत्व एक साथ विद्यमान है। वे इस भ्रम में नहीं पड़ते कि चमत्कार से पूँजीपतियों का हृदय परिवर्तन हो जाएगा और वे मुनाफ़ाखोरी बन्द करके जनजीवन के उत्थान का बीड़ा उठा लेंगे। वे जिस 'जगत्तारिणी ' के

डायन रूप को 'कारतूसों की माला होगी, होगा दृश्य अनूप' कहकर चित्रित करते हैं, उसे 'नफाखोरों को अपनी सगी माई' के रूप में देखते हैं। नागार्जुन की काव्य–चेतना का स्वरूप यथार्थवादी है, वह भावुकता से कोसों दूर है। अयथार्थवादी भावुकता के बूते पर नागार्जुन जैसा समर्थ व्यंग्य लिखना असम्भव है। तिवारी की राय है, 'नागार्जुन अपनी कविताओं में उस अभिजात मानसिकता का विरोध करते है जो मामूली आदमी की उपेक्षा करती है। इसी अर्थ में वे कवि की पक्षधरता के समर्थक है। नागार्जुन कवि को पक्षधरता को इतना तटस्थ, निष्क्रिय और नकारात्मक नहीं मानते। उनके कवि की पक्षधरता अधिक गहन और व्यापक दायित्व बोध से युक्त है। वे मामूली आदमी की उपेक्षा करने वाले कुलीनतावाद का विरोध तो करते ही हैं, मुख्य बात यह है कि नागार्जुन इस मानसिकता के सामाजिक आधार को भी देखते है। वे यह देखते हैं कि वर्ग–विरोध वाले समाज में ऐसी मानसिकता अनिवार्यतः उत्पन्न होती है। यह मानसिकता मणिमय आभूषणों की चमक–दमक का प्रतिबिम्ब है और कोढ़ी कुठब तन को घृणा का पात्र समझती है। नागार्जुन दरिद्रता के कोड़ को दूर करने के लिए जितने चिन्तित थे, उससे वे केवल अभिजात मानसिकता के विरोधी नहीं बनते बल्कि इस मानसिकता को जन्म देने वाली समाज व्यवस्था के भी विरोधी बनते हैं।'

नागार्जुन की जिन्दादिली का दूसरा स्तर है कठिन परिस्थितियों में भी अडिग साहस और धैर्य का। उनका यह गुण भी जनता के प्रति उनके अगाध प्रेम और विश्वास का परिणाम है। नागार्जुन जिस जनता के कवि हैं, उसका जातीय विकास देशी सामन्ती उत्पीड़न और विदेशी आततायियों के विरुद्ध संघर्ष के क्रम में हुआ है।

यह सही है कि जिस युग के कवि नागार्जुन है, उसमें हिन्दी प्रदेश का जीवन क्रान्तिकारी उत्साह देने वाला उतना नहीं, जितना व्यंग्य की सामग्री देने वाला है। नागार्जुन के क्रोध या आवेश वाली कविताओं की तुलना में व्यंग्य बाल कविताओं की सफलता का विश्लेषण करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा था, 'इसका एक वस्तुगत कारण यह है कि बिहार और उत्तर प्रदेश में राजनीतिक जीवन जैसा है– उससे कवि को क्रांतिकारी उत्साह के बदले व्यंग्य के लिए ही सामग्री अधिक मिलती है।"

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. डॉ. अजय तिवारी, नागार्जुन की कविता, पृ. 185

2. विष्णुचन्द्र शर्मा नागार्जुन एक लम्बी जिरह, पृ. 75

3. शोभाकान्त, नागार्जुन मेरे बाबू जी, पृ. 61

4. डॉ. रामविलास शर्मा, नयी कविता और अस्तित्ववाद, पृ. 53

5. डॉ. अजय तिवारी, नागार्जुन की कविता, पृ. 135